Hindi Translation of *Go-Getter*

काम से कामयाबी तक

पीटर बी. काइन

अनुवादः डॉ. सुधीर दीक्षित

काम से कामयाबी तक

आप भी गो-गेटर कैसे बन सकते हैं?

पीटर बी. काइन

अनुवाद: डॉ. सुधीर दीक्षित

विषय सूची

प्रस्तावना

1: मैनेजर और कर्मचारी के गुण

2: बाधाओं से न घबराएँ

3: मुश्किल काम की चुनौती

4: अच्छी तैयारी सफलता की शर्त है

5: बाधाएँ सफलता का इम्तहान हैं

कहानी के सबक

समर्पण

यह छोटी सी पुस्तक मेरे पूर्व प्रमुख ब्रिगेडियर-जनरल लेरॉय एस. ल्यॉन की स्मृति के प्रति समर्पित है, जो अमेरिकी सेना के 40वें डिवीजन की 65वें फील्ड आर्टिलरी ब्रिगेड के कमांडर थे।

देश और सौंपे गए काम के प्रति वफादारी ही उनका धर्म था, जिसका उन्होंने अभ्यास किया और सिखाया, चाहे वह काम कोई भी हो।

प्रस्तावना

पीटर बी. काइन की पुस्तक 'द गो-गेटर' पढ़कर मेरे दिल के तार झनझना गए। कहानी अच्छी है... बहुत ही अच्छी। इस कहानी का नायक कौन है, यह मैं तय नहीं कर पाया। एक तरह से देखें, तो कंपनी के मालिक मि. रिक्स इस कहानी के नायक हैं और दूसरी तरह से देखें, तो कंपनी का सेल्समैन बिल पेक इस कहानी का नायक है। बहरहाल नायक चाहे जो हो, कहानी हमारे दिल को छू लेती है। यह हमें बताती है कि हम अपने काम में कामयाबी तक कैसे पहुँच सकते हैं, चाहे हम सेल्समैन हों या मैनेजर हों, कर्मचारी हों या मालिक हों।

इस कहानी की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह जीवन का प्रतिबिंब है। कहानी में जिस तरह बिल पेक का इम्तहान लिया जाता है, उसी तरह जीवन भी हमारा इम्तहान लेता है। यह हमारे सामने एक के बाद एक बाधा रखता है और शायद मि. रिक्स की तरह जीवन भी हमें सफलता का इनाम देने से पहले यह परखना चाहता है कि हम किस मिट्टी के बने हैं। जब हम बाधाओं से विचलित नहीं होते हैं और अपनी उपायकुशलता से उन्हें पार कर लेते हैं, तो हम कामयाब हो जाते हैं और जीवन हमें सफलता का इनाम दे देता है।

जीवन में सफल होने से पहले आपको इम्तहान देना पड़ता है। इसे इस तरह समझें। अगर आपको कॉलेज की डिग्री चाहिए, तो उससे पहले आपको इम्तहान देना होगा, तभी आपको डिग्री मिलेगी। डिग्री जितनी बड़ी होगी, इम्तहान भी उतना ही मुश्किल होगा। इसी तरह जीवन में भी सफल होने के लिए आपको इम्तहान देना होता है। इस सिद्धांत के आधार पर आप यह पता लगा सकते हैं कि आपको किस स्तर की सफलता मिलेगी। अगर आपके सामने कम बाधाएँ आ रही हैं, तो आपको छोटे पैमाने की सफलता मिलेगी। अगर आपके सामने ज्यादा बाधाएँ आ रही हैं, तो आपको बड़े पैमाने की सफलता मिलेगी। तो इस पुस्तक को पढ़ते वक्त आप ये दो बातें याद रखें: बाधाओं के आकार से ही आपकी सफलता का आकार तय होता है और सफलता पाने से पहले आपको इम्तहान देना पड़ता है।

पुस्तक के अंत में मैंने 'कहानी के सबक' अध्याय जोड़ दिया है। दरअसल मैं इसे लिखने से ख़ुद को रोक नहीं पाया। कहानी छोटी सी है, लेकिन यह हमें कई ऐसे सबक सिखा सकती है, जो सफल होने में हमारी बहुत ज्यादा मदद कर सकते हैं।

डॉ. सुधीर दीक्षित

1: मैनेजर और कर्मचारी के गुण

पैसिफिक कोस्ट के थोक लकड़ी और लदान कारोबार में आल्डेन पी. रिक्स को कैपी रिक्स के नाम से जाना जाता था। उनके पास इतनी सारी मुश्किलें थीं, जितनी ढेर सारे चूजों वाली मुर्गी को भी नहीं होती हैं। और यह बात उन्होंने छुपाकर नहीं रखी, बल्कि चिल्लाकर कही। उन्होंने जिस व्यक्ति से यह कहा, वह स्किनर था, जो रिक्स लॉगिंग एंड लम्बरिंग कंपनी का प्रेसिडेंट और जनरल मैनेजर था। यह वही कंपनी थी, जो कैपी के काष्ठ साम्राज्य को चलाती थी और जिसके संचालन से रिक्स रिटायर हो गए थे। उन्होंने यह बात अपने दामाद कैप्टेन मैट पीज्ली को भी जोर-शोर से और जोश-ओ-खरोश से बताई, जो ब्लू स्टार नैविगेशन कंपनी का प्रेसिडेंट और मैनेजर था। यह कंपनी अमेरिकी जल परिवहन में रिक्स का कारोबार संचालित करती थी।

स्किनर ने यह जानकारी चुपचाप सुनी। और सुनता भी क्यों नहीं, वह कैपी रिक्स का रिश्तेदार नहीं था। लेकिन मैट पीज्ली तो दामाद था, इसलिए उसने अपने पैर एक के ऊपर एक रखे और अपने वाकपटु ससुर को उसी तरह आँखें तरेरकर देखा, जिस तरह वे देख रहे थे।

‘मुश्किलें आपको हैं!’ उसने आपको शब्द पर जोर देते हुए ताना कसा। ‘अब क्या आपकी पीठ में दर्द हो गया है या फिर हरबर्ट हूवर सेक्रेटरी ऑफ कॉमर्स के लिए गलत आदमी है?’

‘अपना ताना और कटाक्ष अपने पास रखो, नौजवान,’ कैपी चीखे। ‘तुम बहुत अच्छी तरह जानते हो कि मैं स्वास्थ्य या राजनीति की बात नहीं कर रहा हूँ। बुढ़ापे में मेरे लिए यह कितने अफसोस की बात है कि मैंने चुन-चुनकर अपने आस-पास दुनिया के सबसे कमअक्ल लोगों को इकट्ठा कर लिया है, जैसे इतिहास में तब से लेकर आज तक नहीं हुए, जब एजाक्स ने बिजली का मजाक उड़ाया था।’

‘मतलब कौन?’

‘देखो तो सही, कितनी कम अक्ल है! अब मुझे इस बात का भी मतलब समझाना पड़ेगा! मतलब तुम और स्किनर।’

‘क्यों, हमने ऐसा क्या कर दिया, जिसकी वजह से आपका बीपी बढ़ गया?’

‘तुम दोनों ही तो सारे बखेड़े की जड़ हो। तुम्हीं दोनों ने मिलीभगत करके मुझे राजी किया कि हम शिपिंग बोर्ड के पच्चीस बकवास मालवाहक जहाजों का प्रबंधन करने लगें। फूटी किस्मत देखो, हमने जैसे ही जहाजों को लिया, देश में मंदी आ गई और ढुलाई के भाव रसातल में पहुँच गए और मैरीन इंजीनियर हड़ताल पर चले गए। इतना ही नहीं, हम पूर्वी देशों में जिस भी नालायक युवा छोकरे को अपने ऑफिस का मुखिया बनाकर भेजते हैं, उसका दिमाग तुरंत ही फूलकर कुप्पा हो जाता है और वह यह सोचने लगता है कि ईश्वर ने उसे जापान में बनी सारी की सारी कृत्रिम स्कॉच व्हिस्की पीने के लिए इस संसार में भेजा है और यह काम करके वह हर प्यासे अमेरिकी को फायदा पहुँचा रहा है। मेरे बुढ़ापे में तुम दोनों ने मुझे इस स्थिति में पहुँचा दिया है कि हमें तार भेजकर अपने मैनेजरों को नौकरी से निकालना पड़ता है। क्यों? क्योंकि हम ऐसे खेल में घुस गए हैं, जो घरेलू मैदान में नहीं खेला जा सकता। विदेशों में हमारा इतना सारा कारोबार है कि हम इसे इतनी दूर बैठकर नहीं सँभाल सकते।’

मैट पीज्ली ने कैपी रिक्स की तरफ आरोप भरी अँगुली उठाई। ‘हमने कभी आपको राजी नहीं किया कि आप उन शिपिंग बोर्ड के जहाजों का प्रबंधन अपने बुजुर्ग हाथों में लें! इसके बजाय यह आप थे, जिन्होंने मुझे राजी किया था। बलि का बकरा तो मैं हूँ! यह तो वही मिसाल हो गई कि उलटा चोर कोतवाल को डाँटे! इससे आपको क्या फर्क़ पड़ा? कुछ नहीं! क्योंकि आप तो दस साल पहले ही रिटायर हो गए थे। जहाजों की सारी मुश्किलों का भार तो मेरे मजबूत कंधों पर है, बुजुर्गवार और मैं आपको बता दूँ कि ये कंधे इस भार को अच्छी तरह उठा सकते हैं।’